

आओ बातें करें

मानवभारती स्कूल देहरादून की पहल



विश्व परिवार दिवस



" वृक्षारोपण का महत्व "

वृक्षारोपण का अर्थ है पेड़ लगाना। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पेड़ पौधों का होना बहुत जरूरी है इससे हमारे आसपास का वातावरण भी स्वच्छ व साफ रहता है तथा वर्षा करने में भी सहायक होता है इसलिए हम मनुष्यों को ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाने चाहिए। लोगों को भी पेड़ पौधे लगाने के लिए प्रेरित करना चाहिए पेड़ पौधों से कि हमें ऑक्सीजन मिलती है जो मानव पशु पक्षियों के जीवन यापन करने में बहुत मदद करती है जहां पर पौधे हमें ठंडी छांव प्रदान करते हैं वहीं पेड़ पौधे हमें नाना प्रकार के फल सब्जियां, जड़ी- बूटियां, कागज, फर्नीचर, दवाइयां भी प्रदान करते हैं जो मनुष्य के लिए अत्यंत जरूरी है। पेड़ पौधों के पत्तों से खाद बनाई जाती है जो खेती के लिए बड़ी लाभदायक होती है। कई पेड़ों की लकड़ियां एवं पत्ते जैसे आम, पीपल, चंदन, अंवला, बेल का उपयोग पूजा पाठ के लिए किया जाता है। इसीलिए पेड़ों को कभी नहीं काटना चाहिए क्योंकि पेड़ पौधों को काटने से पर्यावरण को काफी नुकसान होता है। कई पक्षियों के घर उजड़ जाते हैं तथा बाढ़ भूमि स्वलन आदि होते हैं इसलिए पर्यावरण की दृष्टि को देखते हुए हमें पेड़ों को काटने से रोकना चाहिए और लोगों को जागरूक करना चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं ताकि आने वाले समय में हमारे अपनों को ऑक्सीजन, फल-फूल, सब्जियों के लिए तरसना ना पड़े। आने वाली हमारी पीढ़ियां भी अपने आनंददायक जीवन को जी सकें।

अवंतिका भंडारी

कक्षा आठ

पेड़ हमारे दोस्त
पेड़ हमारे दिल के सच्चे,
पेड़ हमारे लिए बहुत अच्छे।
वह हमको छाया और हवा देते,
पर हमसे कुछ नहीं लेते।
हमको पेड़ों को नहीं है काटना,
सबको है पेड़ों को लगाना।
हमको धरती को बनाना है हरा,
पेड़ लगाने हैं तरह-तरह।

दर्श लेखवार

कक्षा- 4



मैं और मेरी दादी मां

मेरा बचपन मेरी दादी मां के साथ बीता। जब मैं सहारनपुर रहता था, तब मेरी दादी जी मेरे साथ वहीं थी और जब दादी मां देहरादून आई तो, मुझे भी लेकर आई। कहने का अर्थ है कि मैं कभी भी अपनी दादी के बिना नहीं रहा। मेरी दादी मां मेरी सबसे अच्छी मित्र व मार्गदर्शक थी। जब कभी मैं भाग जाता था, जब कभी मैं बाहर जाता था या स्कूल जाता था, तो वापस आने पर सदैव दादी मां मुझे घर के गेट पर मेरी प्रतीक्षा करते हुए मिलती थी। वह एक धार्मिक महिला थी। वह मुझे बहुत सी धार्मिक कहानियां सुनाती थी। मैं उनके साथ धार्मिक स्थानों पर जाता था। दादी मां सदैव मुझे मानवीय गुणों के बारे में बताती थी।

घर में जब भी मम्मी पापा मुझे डांटते तो, मैं दादी मां के पास जाकर सारी नाराजगी प्रकट कर देता था। दादी मां बड़े प्यार से मुझे सुनती और मेरी गलती समझा देती। मैं सदैव अपनी दादी मां के साथ उनके कमरे में जाना पसंद करता था। दादी मुझे हमेशा पढ़ने के लिए प्रेरित करती। कभी-कभी मैं दादी जी को तंग भी करता था लेकिन कभी भी उन्होंने मेरी शिकायत नहीं की।

आज मेरी दादी मां इस दुनिया में नहीं है, 30 अप्रैल 2021 को वह मुझे छोड़ कर सदा के लिए भगवान के पास चली गई। जब उन्होंने अंतिम सांस ली तो मैं अपने परिवार के साथ उनके पास ही था। मेरा सबसे अच्छा दोस्त चला गया और मैं कुछ ना कर सका। हरिद्वार जाकर दादी मां को अंतिम विदाई दी। घर सूना सूना लगने लगा, तब मम्मी ने मुझे समझाया कि यदि मैं अपनी दादी मां को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहता हूं, तो मैं उनके दिखाए मार्ग पर चलूं।

जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। परंतु मुझे लगता है कि मेरी दादी मां के साथ ऐसा क्यों हुआ। लोग कहते हैं कि दादी एक तारा बनकर मुझे देख रही है। मैं प्रतिदिन शाम को आकाश में तारे देख कर दादी मां को ढूंढता हूं। मेरी जैसी दादी मां का होना मुश्किल है। दादी मां को शत-शत नमन।

प्रांजल
9(ब)



धरती माँ

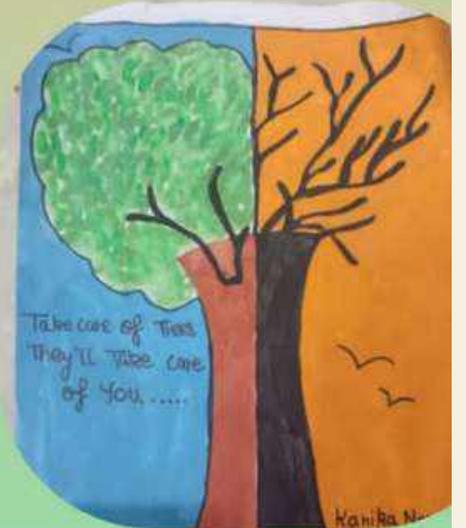
हे मेरे प्यारे बच्चों,
सुबह-सुबह धरती माँ को प्रणाम करो तुम।
ना करो धरती का नाश,
अपने प्रेम से इसे महान बनाओ तुम।

ना फेंको प्लास्टिक को इधर-उधर तुम,
अपनी धरती को स्वच्छ बनाओ तुम।
हे मेरे प्यारे बच्चों,
अपने जन्मदिन पर कम से कम एक वृक्ष लगाओ तुम।

फूलेगी - फलेगी धरती माँ हमारी,
आशीर्वाद में हमें माँ स्वच्छ वायु सप्रेम भेंट करेगी।
मेरे प्यारे बच्चों सुनो,
अपने प्रेम से धरती माँ को सुंदर बनाओ तुम।

हिन्दी अध्यापिका
रूप श्री बिष्ट

नन्हे कलाकार



माँ

माँ के होने से लेकर ना होने तक का सफर
हां, माँ के होने से लेकर ना होने तक का
सफर जिया है मैंने,
जैसे कुछ खो सा गया है ऐसे एहसास को
महसूस किया है मैंने।

उसकी यादों की माला को पिरोया है मैंने,
उस माला को आंसू भरी आंख और मुस्कुराते
चेहरे के साथ अपनाया है मैंने।

उसके आंचल में बैठ गपशप करने से लेकर,
काल्पनिकता में गपशप तक का सफर
जिया हैं मैंने।

उसके खिलखिलाते चेहरे को देख उस पर
लिपट जाने से लेकर,
उसकी हस्ती खेलती तस्वीरो को निहारने
तक का सफर जिया हैं मैंने।

उसका मेरी हर पुकार पर तुरंत तपर हो जाने
से लेकर,
उसकी अंतिम विदाई में मेरे लाख बुलाने पर
भी उसके ना उठने तक का सफर जिया हैं
मैंने।

उसकी फटकार पर रुठ जाने से लेकर,
उस फटकार की याद तक का सफर जिया
हैं मैंने।

उसके साथ वक्त बिताने से लेकर,
उन्ही यादों को पत्रों में समेटने तक का
सफर जिया हैं मैंने।

उसके वापिस आने की आस को आज भी
भीतर जगाया हैं मैंने,
मानो जैसे अपने अहम हिस्से को खो दिया हैं
मैंने

सृष्टि निज्ञावन 12



पेड़-पौधे हमारे मित्र

पेड़ पौधे जीवित होते हैं और संवेदनशील भी। वह हर्ष, पीड़ा, भय सब कुछ समझते हैं। इन सब चीजों की खोज करने वाले थे भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस। जगदीश चंद्र बोस को बचपन से ही जीव विज्ञान में रुचि थी। उन्होंने वनस्पति विज्ञान में महत्वपूर्ण चीजें खोजीं। बोस ने पौधों पर बदलने वाले मौसम के प्रभाव का अध्ययन किया। जगदीश चंद्र बोस ने एक ऐसा यंत्र बनाया था जिससे पौधों को कष्ट और भावनाएं व्यक्त करते देखा जा सकता था

पेड़ इस धरती पर हमसे बहुत पहले से हैं। एक तरह से यह जीव है, जिनसे हमें धरती विरासत में मिली है। मानव जीवन के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने में पौधे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ अपनी जड़ों से धरती के नीचे के जल स्रोतों से जल खींचकर मिट्टी से ऊपर तक ले जाते हैं, फिर अपने पत्तों से वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैस को अपने अंदर खींचकर जलवाष्प छोड़ते रहते हैं इस तरह से पेड़ अपने अंदर से हवा में पानी की विशाल नदियां बनाते हैं। जो वर्षा के रूप में धरती पर बरसती है। मेज, कुर्सी अन्य सभी फर्नीचर पेड़ों से मिलने वाली लकड़ी से बने हैं। अनगिनत प्रजाति के पशु पक्षी इन्हीं वृक्षों को अपना घर बनाते हैं। इनकी उपस्थिति प्रकृति के सौंदर्य में चार चांद लगा देती हैं।

जंगल व पेड़ पौधों का संरक्षण और उन्हें नष्ट होने से बचाना हमारा परम कर्तव्य है। वनों में आग लगना सामान्य बात हो गई है, लेकिन आग से कितना विनाश होता है, कितने वन्यजीवों की मृत्यु हो जाती है, इसका अनुमान लगाना कठिन है। वृक्ष हमारे सबसे अच्छे मित्र हैं, जब तक वह है इस पृथ्वी का अस्तित्व है और प्रकृति के साथ जीवन है। वृक्ष हमारे बिना भी रह सकते हैं, पर हम बिना वृक्षों के नहीं रह सकते। मानव का वृक्ष और प्रकृति से मित्रवत सामंजस्य ही पृथ्वी पर जीवन का आधार है।

हिंदी अध्यापिका
डॉ० बबिता गुप्ता



पर्यावरण

आसपास को स्वच्छ रखो तुम।
ताकि पर्यावरण स्वच्छ रहे।
पेड़ पौधों को मत काटो तुम।
ताकि सबको ऑक्सीजन मिले।।
आओं खूब पेड़ लगाएं हम सब।
आओं करें इसका अभियान।।
रहे खुशहाली जनजीवन में।
ऊंचा रहे भारत का अभिमान।।

अभिषेक पटवाल
आठ



जीवन का आधार वृक्ष हैं

जीवन का आधार वृक्ष हैं,
धरती का श्रृंगार वृक्ष हैं।
प्राणवायु दे रहे सभी को,
ऐसे परम उदार वृक्ष हैं ॥

ईश्वर के अनुदान वृक्ष हैं,
फल-फूलों की खान वृक्ष हैं।
मूल्यवान औषधियां देते,
ऐसे दिव्य महान वृक्ष हैं ॥

देते शीतल छांव वृक्ष हैं,
रोकें थकते पांव वृक्ष हैं।
लाखों जीव बसेरा करते,
जैसे सुंदर गांव वृक्ष हैं ॥

जनजीवन के साथ वृक्ष हैं,
खुशियों की बारात वृक्ष हैं।
योगदान से इस धरती पर,
ले आते वरदान वृक्ष हैं ॥

जीव-जगत की भूख मिटाते,
ये सुंदर फलदार वृक्ष हैं।
जीवन का आधार वृक्ष हैं,
धरती का श्रृंगार वृक्ष हैं ॥

पार्थ जोशी
9वीं (ब)

धरती पर वरदान वृक्ष है

धरती पर वरदान वृक्ष है |
धरती पर श्रृंगार वृक्ष है ॥

प्राणवायु दे रहे सभी को |
ऐसे परम उदार वृक्ष है ॥

फल फूलों की खान वृक्ष है |
जीवन का आसरा वृक्ष है ॥

कड़ी धूप में,
देते शीतल छाव वृक्ष है |

मूल्यवान औषधियां देते |
ऐसे दिव्य महान वृक्ष है ॥

धरती पर वरदान वृक्ष है |
धरती पर श्रृंगार वृक्ष है।

प्राची रावत
9वीं ब



मातृ दिवस

मातृ दिवस एक अवसर है, जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में माँ के प्रति सम्मान और प्रेम व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन माताओं के योगदान को सम्मानित करने के लिए एक कार्यक्रम है। यह एक ऐसा दिन है जो लोगों को उनके जीवन में माँ के महत्व को याद कराता है और दुनिया भर में मातृ संबंधी आंकड़ों पर विशेष जोर देने के लिए एक दिन के रूप में मातृ दिवस मनाया जाता है। ईश्वर हर जगह पर उपस्थित नहीं हो सकते हैं इसलिए उन्होंने माँ का निर्माण किया है। माँ दुनिया के हर बच्चे के लिए भगवान का आशीर्वाद है। क्योंकि एक बच्चे के लिए उसकी माँ ही सब कुछ होती है। वे अपनी माँ के साथ सहज महसूस करते हैं। जब बच्चा किसी चीज़ से डर जाता है तो वह अपने माँ के आंचल में जाकर छुप जाता है। वह अपने आप को अपनी माँ के आंचल में सुरक्षित महसूस करता है। माँ की जगह कोई दूसरा व्यक्ति नहीं ले सकता है। माँ का प्रेम अनमोल होता है।

अनीष कुमार
11वीं

पर्यावरण

वृक्षारोपण हमारे देश के लिए बहुत बड़ी समस्या साबित हो रही है। लोग जगह-जगह बस पेड़ काटने में लगे रहते हैं वह फूल पौधे उगाने का भी नहीं सोचते। लोगों को जिम्मेदार नागरिक होते हुए पेड़ नहीं काटने चाहिए और ज्यादा से ज्यादा पौधे उगाने चाहिए। आजकल कोरोना महामारी के कारण लोगों को ऑक्सीजन की कमी हो रही है, लोग ऑक्सीजन की कमी के कारण एक-दो घंटे में ही भगवान को प्रिय हो रहे हैं।

यह ऑक्सीजन की कमी की स्थिति आज वृक्षारोपण के कारण ही हो रही है। लोग बेपरवाह होकर वृक्ष काटते रहते हैं। वह अपने फायदे के लिए, जैसे आग जलाने के लिए, बेचने के लिए, घर बनाने के लिए, कुदरत का इस्तेमाल कर उसे अंधाधुन नष्ट करते रहते हैं। और भविष्य का नहीं सोचते। आज उन्हीं लोगों के कारण हमें कोरोना काल में यह दिन देखने पड़ रहे हैं।

हमें वृक्षारोपण से बहुत सारी हानियां होती हैं। जैसे जरूरत के समय लकड़ी की कमी होना, ऑक्सीजन की कमी होना, पेड़ पौधों के न होने के कारण फल न मिलना, भोजन न मिलना, फूल न मिलना, वृक्षारोपण के कारण पक्षियों के घर भी नष्ट हो रहे हैं। और घर न होने के कारण बहुत पक्षी मर भी रहे हैं। पक्षी ही नहीं जानवर भी खत्म हो रहे हैं। देखा जाए तो अब इंसान और पेड़-पौधों के साथ पशु पक्षी की संख्या भी खत्म हो रही है।

अंत में इस कथन के माध्यम से मैं सब को यह संदेश पहुंचाना चाहती हूं कि जिस तरह हमें जिंदा रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है उसी तरह आक्सीजन की भी होती है, और अगर पेड़ नहीं तो पूरी धरती नष्ट हो सकती है।

विरम्या मिश्रा।

कक्षा 10वीं



वृक्षारोपण

"वृक्षों की जब करोगे रक्षा,
तभी बनेगा जीवन अच्छा।"

वृक्ष से तो हम सभी ही परिचित हैं कि वृक्ष वह हरे- भरे जीव है जो हमें फल, सब्जी, प्राणवायु -अर्थात् पूरा जीवन ही प्रदान करते हैं परंतु आज मैं इसकी परिभाषा पूरी करना चाहती हूं कि वृक्ष वह हरे भरे जीव है जो स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकते फिर भी दूसरे जीव जंतुओं को जीवन प्रदान करते हैं और यही कारण है कि आज मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए पेड़ काटा जा रहा है।

एक असहाय जीव को काटना कोई मनुष्यता की बात नहीं है बहुत गलत कार्य है। पेड़ काटने से सिर्फ पेड़ का ही नुकसान नहीं हो रहा है पृथ्वी पर ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ रही है जिसके कारण तापमान भी बढ़ रहा है, यह भविष्य के लिए बहुत ही अशुभ संकेत है। मेरी आप सभी से विनती है कि ना तो पेड़ काटे और ना ही काटने दें क्योंकि पेड़ काटने के अपने में ही बहुत से नुकसान हैं। इस कोरोना काल की स्थिति में हम सभी अपने-अपने घरों में ही हैं, इस दौरान हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्थिति को स्वस्थ रखने में वृक्ष बहुत अच्छी भूमिका निभा सकते हैं। आप ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाइए और लॉकडाउन के दौरान कुछ समय पेड़ पौधों को पानी देने में बिताएं इससे आपके वातावरण में हरियाली बढ़ेगी, हवा भी ताजी रहेगी और आपका मानसिक तनाव काफी कम होगा।

जरूरी नहीं है कि आप बड़े बड़े पेड़ लगाकर शुरुआत करें आप अपनी शुरुआत छोटी चीजों से भी कर सकते हैं क्योंकि पेड़ छोटा हो चाहे बड़ा वह लाभ ही देता है। आप अपने घर पर ही छोटे-छोटे पेड़ जैसे-गिलोय, तुलसी, हल्दी, आदि लगा सकते हैं जो आपकी इस कोरोनावायरस दौरान रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाने में मदद कर सकता है। अतः पेड़ लगाइए ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाइए और दूसरों को भी पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित कीजिए और वातावरण को शुद्ध बनाने में योगदान दीजिए।

पर्यावरण खिला-खिला, खिले-खिले हैं लोग।

वृक्षों से औषध मिले, हमको करे निरोग।।

अंजलि रावत

कक्षा 12वीं



मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल

डी- ब्लॉक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड

ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in

फोन- 0135-2669306, 8171465265

संपादक- डॉ बबिता गुप्ता, डिजाइन- विशाल लोधा